ईश्वर हमारी प्रार्थना अवश्य सुनते हैं हम अपना पुरुषार्थ करते रहे...

ईश्वर को सकल कामनाओं का अधिपति माना गया है, इसीलिए हम अपनी इच्छाओं और दुखों को लेकर उनके पास जाते हैं। हमारी कामनाएं भी क्या हैं? बस अपने लिए सुख और शांति को सुनिश्चित करना। लेकिन हमारी सुख-शांति अनेक बार हमारे हाथों में नहीं होती। दूसरे लोग जैसे हमारी संतान, हमारे जनक या हमारे श्रेष्ठ जन उसका रिमोट अपने हाथों में लिए होते हैं। ऐसे में जब सुख और शांति हम से दूर हो जाए और कितनी भी प्रार्थना कर लो, ईश्वर उस पर तथास्तु की मुहर न लगाएं, तो हमें क्या करना चाहिए?

संशय और विश्वास का द्वंद्व

ऐसी स्थिति में ईश्वर पर संदेह होना और यह विचार आना स्वाभाविक है कि ईश्वर हैं भी या नहीं? और यदि हैं, तो क्या वे हमारी प्रार्थनाओं को सुन रहे हैं? यह संशय हमें तोड़ भी सकता है और सशक्त भी बना सकता है। प्रश्न यह है कि हम इस संशय को किस दृष्टिकोण से देख रहे हैं? संशय जहां भी आता है, वह संबंधों में तनाव डाल देता है। संबंध असहज भी होंगे और उन पर प्रश्नचिह्न भी लगेगा, क्योंकि संशय का कार्य ही तोड़ना है। पर यह संशय तर्कसंगत भी लगता है। जब हम अपनी आकांक्षाओं का भार लेकर ईश्वर के पास जाते हैं और वे उन्हें ठंडे बस्ते में डाल देते हैं, तो हमें क्रोध और संदेह का आना लाजमी है। यह संदेह विश्वास की जड़ में मट्ठे की तरह काम करता है, जो उस जड़ को दुर्बल कर देता है।

ईश्वर के तथास्तु न कहने के तीन मुख्य कारण

ईश्वर हमारी प्रार्थनाओं पर शीघ्रता से तथास्तु नहीं कहते, इसके पीछे तीन गहरे कारण हो सकते हैं -

* **हमारा संघर्ष अभी पूरा नहीं हुआ है:** जीवन एक संघर्ष है। यहां बिना कुछ किए या आराम से बैठे कुछ नहीं मिलता। माया और बुद्धि दोनों मिलकर हमें भली-भांति मथती हैं। यह मंथन जरूरी है, क्योंकि इस मंथन के बाद ही ईश्वरीय प्रेम का घी निकलता है।
* **ईश्वर पर भरोसा दृढ़ नहीं है:** कई बार हमारी श्रद्धा केवल संकट में जागती है। ईश्वर हमारे धैर्य और विश्वास की परीक्षा लेते हैं ताकि हमारा उनसे संबंध केवल लेन-देन का न रहकर आत्मिक हो जाए।
* **हमारी मांग हमारे लिए उचित नहीं है:** हम अक्सर वही मांगते हैं जो हमें वर्तमान में अच्छा लगता है, लेकिन ईश्वर वह देखते हैं जो हमारे भविष्य और हमारी आत्मा के लिए कल्याणकारी हो। एक मां भी हमेशा बच्चे की हर ज़िद पूरी नहीं करती, वैसे ही ईश्वर भी हमारी हर अनुचित मांग को स्वीकार नहीं करते।

ऐसे समय में हम क्या करें?

सबसे पहले कर्म को प्रधानता दें: जब प्रार्थना काम न आए, तो हमें समझना चाहिए कि अब पूरी ऊर्जा के साथ कर्म करने का समय है।

प्रार्थना हमें मानसिक शक्ति देती है, लेकिन परिस्थिति को बदलने के लिए हमारा पुरुषार्थ आवश्यक है।

स्वीकार्यता का भाव लाएं: हम यह मान लें कि जो स्थिति आज है, वह किसी गहरे कारण से है। जब हम ईश्वर की मर्जी को स्वीकार कर लेते हैं, तो हमारे मन का तनाव अपने आप कम होने लगता है।

आत्म-मंथन करें: हम यह जांचें कि जो हम मांग रहे हैं, क्या वह वास्तव में हमारे विकास के लिए जरूरी है, या वह केवल एक क्षणिक इच्छा है?

ईश्वर का मौन उनकी अनुपस्थिति नहीं, बल्कि उनकी एक अलग योजना का संकेत है। जब वे हमारी प्रार्थना नहीं सुन रहे होते, तब वे हमें भीतर से मजबूत बना रहे होते हैं।